LITTLE LADY OF THE SUN

BY

J. C. ALLEN

TRANSLATED INTO HINDI BY

LALA SITA RAM B.A

सूरज बाई ।

जे. सी. आलेन साहेब की अंगरेज़ी पुस्तक का

अनुवाद

लाला सीताराम बी. ए. का रचा हुआ ।

LONGMANS. GREEN AND CO.

8, HORNBY ROAD, BOMBAY

303, BOW BAZAR STREET, CALCUTTA

167, MOUNT ROAD, MADRAS

LONDON AND NEW YORK

1914

सूरज बाई।

१

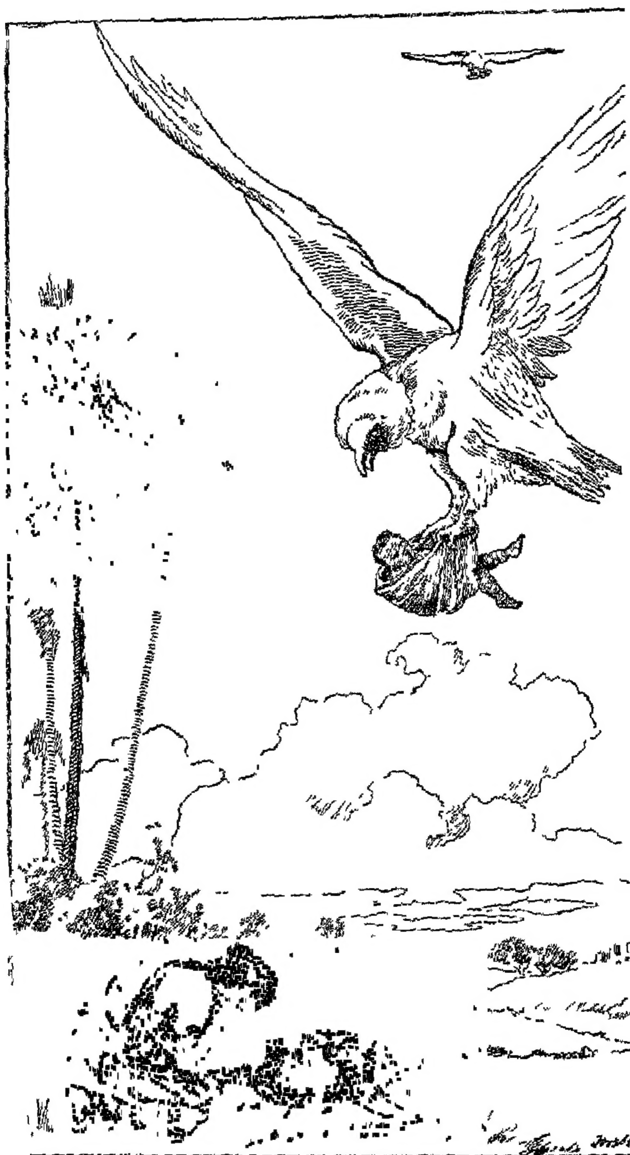
बहुत दिनों की बात है एक गांव में एक ग्वालिन रहती थी। वह नित्य शहर में दूध बेचने आया करती थी। उसके एक बहुत छोटी लड़की थी जिसे वह अपनी गोद में लिये रहती थी।

एक दिन वह ग्वालिन बहुत थक कर सड़क के किनारे बैठ गई। उसने अपनी दुधेड़ी उतार धरती पर रख दी और लड़की को भी पास ही लेटा दिया।

जहां वह ग्वालिन बैठी थी उसके ऊपर दो चील्हें मँड़रा रहीं थीं। इन मे एक नर था दूसरी मादा। ग्वालिन की लड़की को देख मादा चील्ह बोली, "प्यारे! मुझे एक लड़की चाहिये सो यही अवसर है। तुम नीचे धरती पर जाकर उस लड़की को उठा लाओ"।

नर, "बहुत अच्छा" कहकर, चटपट नीचे उतर आया और ग्वालिन की छोटी लड़की को पंजे में दबा कर ले उड़ा। उस समय बेचारी ग्वालिन बेबस हो धाड़ें मार मार कर रोने लगी।

दोनों पंछी उस लड़की को लिये बहुत दूर निकल गये। कई बस्तियों और अनगिनती पेड़ों के ऊपर होता हुआ वह चील्हों का



जोड़ा उस बड़े पेड़ पर पहुंचा जहां उनका घोंसला बना था। यह पेड़ ऐसा वैसा पेड़ न था। यह जादू का था और चीलों का जोड़ा भी जादू के ज़ोर से पखेरू बना हुआ था। यह दोनों जिस घोंसले में रहते थे वह घास पात और तिनकों का बना न था। वह पिंजड़े के आकार का था और उस में लोहे की सलाखें लगी थीं। यह पिंजड़ा घर के ढंग का बना हुआ था और इसमे लोहे के सात दरवाज़े थे।

चीलों ने उस लड़की को ले जा कर उसी पिंजड़े में रक्खा। वह दोनों उस छोटी लड़की को बहुत प्यार करते थे और उन्हों ने उस का नाम सूरजबाई रख लिया था।

सूरजबाई पर उन दोनों पखेरुओं का बड़ा दुलार था। वह दूर दूर तक उड़ कर जाते और सूरज के लिये बड़े चटकीले भड़कीले कपड़े, खिलौने और खाने के लिये बढ़िया बढ़िया मिठाइयां लाते। सूरज इन पखेरुओं के घोंसले में बहुत सुखी थी। सूरज समय पाकर बारह बरस की हुई: तब एक दिन नर चील्हने मादा से कहा "सूरज के लिये कहीं से हीरे की एक अंगूठी लानी चाहिये।" यह सुन मादा बोली, "बहुत अच्छी बात है, पर ऐसी अंगूठी लाने के लिये हमे बहुत दूर का सफर करना पड़ेगा। क्योंकि सब से बढ़ियां सोने की अंगूठी तो लाल समुन्दर के पास मिलेगी और वहां तक जाने आने में पूरे बरस दिन लग जायंगे।"

यह सोच बिचार कर दोनों पखेरुओं ने सूरज के खाने पीने के लिये उस घोंसले में इतना सामान रख दिया जो साल भर तक न चुके। सूरज अकेली घबराय नहीं इस लिये उस घोंसले में उन

पखेरुओं ने एक कुत्ते और एक बिल्ली को भी लाकर बिठा दिया इतना सामान कर वह दोनों लाल समुन्दर की ओर रवाना हुये ।

सूरजबाई उस घोंसले में अकेली तो रह गई, पर वह घबराई नहीं। क्योंकि उसका मन उस कुत्ते और बिल्ली के साथ खेलने में लग जाता था। जाड़े से अपने को बचाने के लिये वह उस लोहे के पिंजरे में आग रखती थी और इस आग को कभी बुझने नहीं देती थी। इसी आग पर वह अपना खाना बना लेती थी।

एक दिन उस बिल्ली ने सूरज की रोटी चुरा ली। यह बात सूरज से न छिप सकी। तब उसने उस बिल्ली को डांटा और यह कह कर कि 'अरी नट खट बिल्ली, तुझे कोई चीज चुरानी न चाहिये' उसके एक छड़ी मार दी।

इस पर बिल्ली बहुत बिगड़ी और मन ही मन कहने लगी मैं क्यों न चुराऊं? मैं जरूर चुराऊंगी; क्योंकि चोरी करना मुझे अच्छा लगता है मेरी मालकिन ने मुझे मारा है सो मैं उससे इसका बदला लेने के लिये उसकी आग बुझा दूंगी।' यह विचार कर उसने आग बुझा दी।

सूरज को यह बात मालूम हुई तो वह बहुत बिगड़ी। उसका बिगड़ना भी ठीक ही था। क्योंकि अब वह खाना कैसे बनाती। आग के बिना न तो वह और आग बना सकती और न अपने लिये रसोई ही तैयार कर सकती थी।

उसने बार बार आग जलाने की तरकीब सोची पर उसके मन पर एक भी बात न चढ़ी। इस का फल यह हुआ कि सूरज को

सारे दिन लंघन करना पड़ा। कुत्ता और बिल्ली भी उस दिन भूखे ही रहे। सूरजबाई यही सोचती रही कि आग किस तरह जलानी चाहिये। अन्त में वह पिंजड़े के किनारे गई और इधर उधर देखने लगी। वहां से बहुत दूर उसे धुआं दिखाई दिया। तब वह पेड़ पर से उतर कर नीचे आई और उसी ओर चली जिधर धुआं निकल रहा था।

२

सूरजबाई दूरतक चली गई। अन्त में वह एक झोंपड़ी के दरवाजे पर पहुंची। उस झोपड़ी में एक बुढ़िया रहती थी। वह आग ताप रही थी। यह बुढ़िया एक राक्षसी थी और अपने लड़के के साथ उस झोपड़ी में रहती थी। सूरज यह हाल जानती न थी।

सूरज को देख बुढ़िया की राल टपक पड़ी। वह अपने ओंठ चाट कर मन ही मन कहने लगी, "आज जानें किस भागवान का मुंह देखा है जो ऐसा मजेदार भोजन हाथ लगा चाहता है। पर दुख की बात यह है कि मेरा लड़का इस समय यहां नहीं है। पर इसकी क्या चिन्ता, जबतक वह न आ जायगा मैं इसे बातों में लगाये रहूंगी। जब वह आ जायगा तो वह इसे मार कर खा लेगा।"

यह विचार कर उस बुढ़िया डाइन ने चिल्लाकर सूरज से कहा "तू कौन है और क्या चाहती है?"

सूरज बोली—"मैं चील्ह की लड़की हूं; मेरे मां बाप लाल समुन्दर को गये हैं; मैं उनके घोंसले में अकेली रहती हूं मेरे

पास जो आग थी वह बुझ गई है। इस लिये आग लेने तुम्हारे पास आई हूं। तुम मुझे थोड़ी सी आग अपनी बरोसी से निकाल कर दे दो, तुम्हारा बड़ा गुन मानूंगी।"

डाइन बोली—"अरी मेरी बेटी, मैं तुझे आग जरूर दूंगी। पर मेरा थोड़ा सा काम कर दे। देख मैं बूढ़ी हूं मेरे हाथ पैर नहीं चलते सो देख उस घड़े में जो चावल रक्खे हैं, उनमे से थोड़े चावल पीस दे"

बेचारी सूरज ने बुढ़िया के चावल पीस दिये और बोली, "ला मुझे आग दे, मैं अपने घर जाऊं"।

बुढ़िया ने उसे आग न दी और बोली, "बेटी थोड़ासा अनाज और पीस डाल, तब जाना।"

"बहुत अच्छा" कहकर बेचारी सूरज ने उस अनाज को भी पीस कर रख दिया और फिर डाइन से आग मांगी।

तब डाइन ने उसे फिर भी रोका और बोली, "मेरी झोंपड़ी में झाड़ू लगा दे।"

सूरज ने उसकी झोंपड़ी झाड़ बुहार कर साफ सुथरी कर दी।

सूरज तो काम में लगी थी और डाइन की निगाह जंगल की ओर थी। वह घबरा रही थी—"न जाने आज मेरा बेटा अभी तक क्यों नहीं आया?" इतने में सूरज ने बुढ़िया से फिर आग मांगी।

पर बुढ़िया ने इस बार भी सूरज को रोक कर कहा—"बेटी अभी एक काम और भी करना है। कुयें से थोड़ा सा पानी तो भर ला।"

सूरज कुयें पर गयी और डाइन के लिये पानी भी भर लाई। पानी रख सूरज ने उकता कर बुढ़िया से कहा, "ले बुढ़िया, तेरा सारा काम मैं ने कर दिया अब आग देती है कि नहीं? न दे तो वैसा कह मैं दूसरी जगह से ले आऊं।"

इस पर बुढ़िया ने कहा, "बेटी खफा न हो। तू ने मेरा बड़ा काम किया। अच्छा यह ले आग। पर एक काम करना। मै तुझे अनाज देती हूं—सो तू इसे मेरे घर के दरवाजे से लेकर अपने घर के दरवाजे तक थोड़ा थोड़ा डालती जाना जिससे तुझे मेरे घर आने में भटकना न पड़े।" यह कह कर उसने एक थैली मे अनाज भरकर सूरज को दिया।

सूरज ने आग और अनाज की थैली ले कर अपने घर की राह ली। रास्ते मे वह थोड़ा थोड़ा अनाज डालती जाती थी जिस से रास्ता बन जाय। अन्त मे वह अपने घोंसले पर पहुंची और पेड़ पर चढ़ कर उस लोहे के पिंजड़े के सातों दरवाजे भीतर से बन्द कर लिये। फिर उसने आग जला कर रसोई बनाई। रसोई तैयार कर के पहले उसने कुत्ते और बिल्ली को खिलाया पीछे उसने आप खाया।

३

ज्योंही सूरज उस डाइन की झोंपड़ी के बाहर निकली, त्योंही उसका लड़का आया। उसे देखते ही बुढ़िया ने पूछा "आज क्यों इतनी देर लगाई?" फिर बोली "आज बड़ा बढ़िया शिकार हाथ से निकल गया। एक लड़की आई थी जो खूब तैयार

थी। मैं ने उसे बहुत देर तक अटका रक्खा था और देखती रही पर तू ऐसा अभागा है कि समय पर न आया। अच्छा आज तुझे बिना आलू के रहना पड़ेगा।"

यह सुन लड़के ने मां से पूछा "वह लड़की गई किधर, मुझे बता भर दे मैं बात की बात मे उसे पकड़ लाता हूं।" बुढ़िया बोली "अनाज की चिन्हानी धर कर तू चला जा। तू ठीक उसी जगह पहुंच जायगा जहां वह लड़की रहती है।" बुढ़िया का बेटा अनाज की चिन्हानी देखता चला और थोड़ी ही देर मे उस पेड़ के नीचे पहुंचा, जिसके उपर सूरज लोहे के पिंजड़े में रहती थी। उस पेड़ के आगे चिन्हानी न देख वह वहीं रुक गया और इधर उधर ऊपर नीचे आंखें फाड़ कर देखने लगा। उसे पेड़ की डालियों के भीतर बहुत ऊंचे पर सूरज का पिंजड़ा दिखाई दिया।

वह झट पेड़ पर चढ़ा और पिंजड़े का दरवाजा खटखटाया और उसमें धक्का भी दिया पर वह न खुला। सूरज ने तो उसे भीतर से बन्द कर रक्खा था — खुलता कैसे। तब उसने एक चाल चली और बोला "बेटी दरवाजा खोलो! हम लाल समुन्दर से आ रहे हैं। देख तो तेरे लिये कैसी अच्छी हीरे की अंगूठी लाये हैं।"

सूरज थक गई थी और गाढ़ी नींद सो रही थी। उसने बुढ़िया के लड़के की बात सुनी तक नहीं। तब राक्षस ने दरवाजा तोड़ना चाहा पर दरवाजा बहुत मजबूत था और उसके तोड़े न टूटा। राक्षस की एक उंगली टूट गई और उसका नाखून किवाड़ की एक दरार में टूट कर फंस गया। वह नाखून हम लोग

सूरज बाई।



का सा न था। उसकी गरदन परेवड़ के पंखे कीसी थी पर वह नह बड़ा नुकीला और विषैला था। जब सूरज ने अपने पिंजड़े के सब द्वार खोले, तब सातवां द्वार खोलते समय उसके हाथ में वह नह चुभ गया। नह विषैला तो था ही सो उसका विष सूरज के सारे बदन में फैल गया। बेचारी सूरज गिर पड़ी और उसके प्राण निकल गये।

इस घटना के थोड़ी देर पीछे उसी दिन चील्हों का जोड़ा भी लौट कर वहां आ गया। सूरज को मरी देख दोनों बड़े दुखी हुये और जो हीरे की अंगूठी लाये थे उसे सूरज की अंगुली में पहना कर न जाने किधर चले गये।

४

उस जोड़े के जाने के कुछ ही देर पीछे उस पेड़ के नीचे एक राजा आया। वह शिकार खेलता फिरता था, उसके साथ शिकारी बाज़ और कुत्ते थे। अचानक उसकी निगाह सूरज के पिंजड़े पर पड़ी। उसने उसी दम अपने एक नौकर से कहा, "इस पेड़ पर चढ़ जा और देख पिंजड़े में क्या है।"

नौकर ने पेड़ से उतरकर कहा, "महाराज एक छोटासा घर बना हुआ है, उस में सात लोहे के दरवाजे हैं और उसके भीतर एक लड़की मरी पड़ी है। पर उस लड़की की देह पर बड़े महंगे कपड़े और गहने हैं। उस के पास ही एक कुत्ता और एक बिल्ली बैठी है।"

यह सुन राजा ने नौकर से कहा, "उस छोटी लड़की को नीचे उतार ला।"

नौकर उस लड़की को नीचे उतार लाया। राजा उसे देख बहुत उदास हुआ। उसने उसका हाथ पकड़ कर देखा तो वह बहुत ठंढा जान पड़ा। सूरज का हाथ ठंढा तो था पर ठिठुरा न था। इससे राजा को भरोसा हो गया कि लड़की अभी मरी नहीं है। इतने में उसकी निगाह उस लड़की की हथेली पर पड़ी जिसमें एक लम्बे कांटे की तरह उस डाइन के लड़के का विषैला नह गड़ा हुआ था। राजा ने उसे पकड़ कर खींच लिया। नह के निकलते ही सूरज उठकर बैठ गयी और अपनी आखें मलने लगी और बोली "मैं कहां हूं? क्या मैं यह सपना देख रही हूं?"

राजा ने कहा—"ए सुन्दरी तुम सपना नहीं देख रही हो। मैं यहां का राजा हूं। मेरे नौकर ने तुम्हें पेड़पर से उतारा है। अब तुम यह बताओ कि तुम कौन हो।" उसने जवाब दिया "मैं चील्हों की बेटी हूं।

राजा—"नहीं नहीं तुम रानी हो।"

सूरजबाई—"नहीं नहीं मैं चील्ह की बेटी हूं, रानी नहीं हूं। मैं जनम से इसी पेड़ पर पली हूं। मेरा नाम सूरजबाई है॥"

राजा—"तुम रानी नहीं हो तो हम अब तुम्हें रानी बनाये देते हैं। सूरजबाई तुम मेरी रानी बनो।"

सूरजबाई—"बहुत अच्छा।"

राजा उसे अपने महल मे ले गया। वहां कुछ ही दीनों बाद उन दोनों का ब्याह हो गया। राजा की मां, राजा की बहिन, और राजा के घर के और लोग सूरज को देख बहुत प्रसन्न हुये। राजा के महल में सूरज के आने से सब प्रसन्न थे। एक पहली रानी उससे जलती थी।



राजा अपनी इस नई रानी सूरज को बहुत प्यार करता था। उस ने उस की सेवा के लिये बहुत सी टहलनियां लगा दीं। यह सब की सब सुन्दरी तो न थीं पर मन की सब ही अच्छी और दयालु थीं। इन टहलिनियों में सूरज एक बुढ़िया को बहुत चाहती थी। वह बुढ़िया भी सूरज को बहुत प्यार करती थी।

एक दिन उस बूढ़ी टहलनी ने सूरज से कहाः—"रानी तुम सावधान रहा करो। तुम्हारी सौत तुम्हें नहीं चाहती। ऐसा न हो कि एक दिन वह तुम्हें दुख दे।"

सूरज—"तू यह बे सिर पैर की बातें क्यों कर रही है? मेरी सौत मुझे क्यों दुख देगी? मैं ने उसका क्या बिगाड़ा है? क्या हम दोनों बहिनों की तरह मिल जुल कर नहीं रह सकतीं।"

बुढ़िया ने यह सुन कर सिर तो हिला दिया पर कहा कुछ भी नहीं। सूरज अपनी सौत के पास आने जाने लगी और उसकी सौत भी उसके पास कभी कभी आया करती थी।

एक दिन सूरज अपनी सौत के साथ बाग मे खड़ी थी। पास ही एक पोखरी थी सूरज से उसकी सौत बोली—"सूरज! तुम्हारे गहने बड़े अच्छे हैं, तुम उनकी सुन्दरता आप नहीं देख सकतीं; चलो उस पोखरी पर चलें उसका जल कांच सा झलक रहा है। उस में तुम अपने गहनों की झलक देख सकोगी।"

जिस समय सूरज और उसकी सौत में बातें हो रही थीं उसी समय सूरज की बूढ़ी टहलनी भी उसी बाग में आ निकली



सूरज और उसकी सौत ।

वह दौड़ी दौड़ी सूरज के पास गयी और उसका आंचल पकड़ कर उससे कहने लगी – "रानी जी तालाब पर मत जाना।"

सूरज ने कहा "मेरा आंचल छोड़ दे"। बुढ़िया ने आंचल छोड़ दिया और सूरज उस बुढ़िया के कहने पर कान न दे कर अपनी सौत के हाथ में हाथ डाल पोखरी की ओर चल दी। वहां आकर वह दोनों किनारे पर खड़ी हो कर पानी की ओर झुकीं। सूरज को अपने गहनों की सुन्दरता देख पड़ी। पानी दरपनी की तरह चमक रहा था। सूरज पानी में अपने गहनों की परछाहीं देख रही थी कि इतने में उसकी सौतने पीछे से उसे अचानक ऐसा धक्का दिया कि वह धड़ाम से पानी में गिर पड़ी और डूब गयी।

सूरज को इस तरह पानी मे डुबा कर उस की सौत अपने महल मे भाग गयी। रात बीतने पर जब सवेरा हुआ तब अपनी खिड़की खोल सूरज की सौत ने उस ओर झांका जहां वह सूरज को डुबा आई थी। वहां वह देखती क्या है कि पीले रंग के सूरज मुखी फूल का एक ऊंचा पेड़ खड़ा है।

६

राजा ने सूरज को महल में न देख कर उदास होकर उसे चारों ओर बहुत ढुँढ़वाया, पर उसका कहीं भी पता न चला। तब वह अपनी पहिली रानी के पास गया और उससे बोला, "सूरजबाई कहां है? अरी कसाइन! जान पड़ता है तूने उसे मार डाला है।"

इस पर रानी ने कहा, "नहीं, नहीं, मैंने उसे नहीं मारा है।" तब राजा ने बुढ़िया को पकड़वाकर बन्दीघर मे बन्द कर दिया।

राजा को सूरज के मारे जाने का बड़ा दुःख हुआ। सूरज उसके मन में ऐसी बस गई थी कि जहां वह जाता वहीं उसको सूरज ही देख पड़ती थी। राजा ने सूरज के वियोग मे खाना पीना छोड़ दिया। इतनाही नहीं राजा ने उस दिन से अपनी पहिली रानी का मुंह देखना भी छोड़ दिया। राजा की ऐसी दशा देख सब लोग कहने लगे राजा अब बहुत दिन नहीं जी सकते।

एक दिन राजा घूमते फिरते उस पोखरी के किनारे पहुँचे। वहा उन्हों ने जल के भीतर सूरज मुखी का पेड़ लगा हुआ देखा। राजा को देख सूरज मुखी का फूल धीरे धीरे राजा के पैरों की ओर झुका। यह देख राजा ने कहा, "अरे फूल तुझे देख मुझे अपनी मरी हुई छोटी रानी याद आती है। यह भी ऐसी ही कोमल और सुन्दर थी जैसा कि तू है।"

उस दिन से राजा उस पोखरी के किनारे नित्य जाता और उस पेड़ के सामने बैठता था। यह हाल पहली रानी ने सुना तो वह बहुत बिगड़ी। उसने माली से कहा "उस पेड़ को उखाड़ कर जला दो," माली ने रानी का कहना किया और उस पेड को उखाड़ कर जला दिया।

दूसरे दिन जब राजा वहां गया तो उसने उस पेड़ को न पाया।

माली ने उस पेड़ की राख बन में फेंक दी। जहां वह राख

डाली गई, वहां एक आंम का पेड़ उग आया। वह आम का पेड़ इतना लम्बा और सीधा था और इतनी जल्दी बढ़ा कि उसे देखने के लिये उसके आस पास लोगों की भीड़ लग गई।

अन्त में उस पेड़ की सब से ऊंची डाली पर बौर आया। और कुछ दिन पीछे उसमें एक कैरी लग गई। धीरे धीरे वह बढ़ने लगी और वह इतना बड़ा आम हो गया कि उसकी बराबरी का आम राज भर में दूसरा न था। दूर दूर से लोग उसे देखने के लिये जाते थे पर उसे छूने की किसी की हिम्मत न पड़ती थी। क्यों कि वह राजा का आम था।

७

तुम लोग सूरज की मां ग्वालिन को भूले न होगे। वही ग्वालिन एक दिन सांझ को उसी पेड़ के नीचे हो कर निकली। उसके हाथ में रीती दुधेड़ी थी। वह बहुत थकी मांदी थी। इस लिये वह उसी पेड़ के नीचे दुधेड़ी सिरहाने रख कर सो गई।

उसकी आंख खुली तो वह देखती क्या है कि उसकी दुधेड़ी में एक आम पड़ा हुआ है। उस आम को देख वह बहुत डरी। वह मन ही मन कहने लगी—"हाय अब मैं क्या करूं? न जानूं राजा मेरा क्या कर डाले? लोग तो यही समझेंगे कि मैं ने यह आम चुराया है। यह कोई न कहेगा कि यह आम अपने आप इस दुधेड़ी में गिरा है। जो मैं इसे यहीं छोड़ दूं तो चिड़िया या चींटियां इसे बिगाड़ देंगी। मैं इसे अपने घर ले जाऊंगी।" ऐसा बिचार पक्का कर वह दुधेड़ी को ढाक वहां से चल दी।

घर पहुंच कर उसने उस दुधेड़ी को और दुधेड़ियों से ढाक कर एक कोने मे रख दिया। रात हुई तो उसने अपने मालिक और बाल बच्चों से कहा "अच्छा बताओ तो आज मुझे क्या मिला है?" यह सुन सब चकराये और उससे पूछने लगे, "अच्छा तुम्ही बताओ कि आज तुम क्या लाई हो।" ग्वालिन बोली, "तुम्हें मेरे कहने पर विश्वास न होगा। मुझे आज राजा के पेड़ का आम मिला है। मैंने उसे तोड़ा नहीं पर जब मैं पड़ी सो रही थी। तब वह आम मेरी दुधेड़ी में आ पड़ा। बच्चो, जाकर एक चाकू तो ले आओ। हम सब उसमे से एक एक टुकड़ा बांट कर खायं।" फिर उसने अपने मालिक से कहा "तुम उस कोने में धरी हुई सब से नीचे की दुधेड़ी ले आओ।" मालिक ने सबसे नीचे की दुधेड़ी उठाई तो उसे रीता पाकर वह अपनी घरवालीसे बोला, "क्यों? मुझ से ठट्ठा करती है। इसमे तो आमवाम कुछ भी नहीं है। इसमें तो एक अजूबा चीज़ है। आकर देख लो।"

यह सुन ग्वालिन दौड़ी दौड़ी वहां गई और देखती क्या है कि उस दुधेड़ी में आम की जगह एक छोटी लड़की पड़ी है और उसके सिर पर एक चमकीला रत्न चमक रहा है। ग्वालिन बोली – "राम राम यह क्या, यह क्या! अच्छा मैं इसे अपनी बेटी की तरह पालूं पोसूंगी।" ग्वालिन ने उसे दुधेड़ी से निकाल कर मुलायम बिस्तरे पर लिटा दिया।

वह छोटी लड़की धीरे धीरे बढ़कर सयानी हुई। वह बड़ी सीधी और नेक थी। पर सदा उदास रहती थी।

एक दिन ग्वालिन ने उससे उसका नाम पूछा तो उसने कहा – "मेरा नाम सूरजबाई है।"

८

एक दिन राजा अचानक उस ग्वालिन की झोंपड़ी के पास से निकला। उस समय सूरजबाई कुँए पर पानी भर रही थी। राजा की निगाह उस पर पड़ी। उसे देखते ही राजा बोल उठा, "अरे यही तो मेरी छोटी रानी सूरज है।"

राजा ने उसी समय घोड़े को उस ओर दौड़ाया पर सूरजबाई फिर वहां न देख पड़ी।

राजा ने तब उस झोंपड़ी का दरवाजा खटखटाया कै (कहने लगा "हमें भीतर आने दो।"

यह सुन वह ग्वालिन द्वार पर आई और झल्ला कर बोल उठी, "तू कौन है और क्यों मेरे किवाड़ तोड़े डालता है?"

राजा ने कहा, "हम यहा के राजा हैं हमने अपनी छोटी रानी को अभी तुम्हारे कुँए पर देखा है। हमें भीतर तो आने दो।"

ग्वालिन ने कहा "अभी एक पल भी नहीं बीता, मेरी लड़की कुँए पर पानी भरने गई थी। तुमने उसी को देखा होगा।"

यह सुन राजा सन्न होगया और उदास मन वह घोड़े पर चढ़ अपने महल की ओर चल दिया। घर पहुंच कर उसके मन मे विचार की लहरें उठने लगीं। वह मन ही मन कहता था, "मैंने जरूर सूरज को देखा है। उसके मरने का मुझे अब विश्वास नहीं होता। अच्छा मैं उस बुढ़िया से तो पूछ देखूं। देखूं वह क्या कहती है।"

बुढ़िया तुरन्त राजा के सामने लाईगई। राजा ने कहा, 'बुढ़िया, सच सच कहना, क्या तू अपनी मालकिन को चाहती थी।"

सूरज बाई ।



बुढ़िया – "महाराज सच मुच मैं उन्हे बहुत चाहती थी।"

राजा – "अच्छा तो तू मेरे कहने से उसका पता लगा। उस ग्वालिन के घर जा कर देख वहां सूरजबाई तो नहीं है?"

बुढ़िया ग्वालिन के घर गई और ग्वालिन से उसने बड़ा हेल मेल बढ़ाया। एक दिन बातों ही बातों मे बुढ़िया ने अपनी मालकिन के खोजाने और उसके बिछोह मे राजा के उदास होने का सारा हाल उस ग्वालिन से कहा।

तब ग्वालिन ने भी अपनी इस नई सखी बुढ़िया से उस दिन की आमवाली सारी घटना कही। उसे सुन बुढिया बहुत प्रसन्न हुई और मन ही मन बोली "यह तो बड़े आनन्द की बात है कि मेरी मालकिन यही है," पर ग्वालिन से उसने यह नहीं कहा.

बुढ़िया बोली "क्या सूरजबाई ने अपना सारा हाल तुमसे कहा है।" ग्वालिन ने कहा "नहीं तो मैंने उससे पूछा भी नहीं।"

तब बुढ़िया बोली "अच्छा बहिन, उसे यहां बुलाकर पूछ तो मुझे तो भरोसा है कि वह सब कह देगी।"

सूरजबाई बुलाई गई और पूछने पर कहने लगी।

"मेरी मा तुम्हारी तरह एक ग्वालिन थी। उसने मुझे एक दिन सड़क के किनारे एक ओर लेटा दिया था। इतने में दो चीलें आईं और एक मुझे पंजे में दबाकर उड़ गई। उन्हीं दोनों ने मुझे पाला पोसा और मैं उन्हें अपना मा बाप करके मानने लगी।"

ग्वालिन – "अरी प्यारी बेटी। मैं ही तेरी मा हूं। मैंने ही तुझे सड़क के किनारे लेटा दिया था और तुझी को चील ले उड़ी थी। बड़ी बात हुई कि तू मुझे मिल गई"

सूरजबाई – "अम्मा, यह तो फिर सच मुच बड़े ही आनन्द की बात है।"

यह सुन ग्वालिन दौड़ी दौड़ी अपने स्वामी के पास गई और उससे सूरज का सारा हाल कह दिया। फिर उसने अपनी दूसरी लड़की और लड़कों को बुलाकर कहा, "देखो यह तुम्हारी बहुत दिनों की खोई बहिन फिर घर आगई।"

यह सुन मारे प्रसन्नता के ग्वालिन और उसके घरवालों की आंखों से आंसू निकल पड़े।

उधर वह बुढ़िया भी दौड़ी दौड़ी राजा के पास पहुंची।

६

सूरजबाई की मां ने उस से पूछा "बेटी यह तो बतला उन चीन्होंने तुझे सताया तो नहीं।"

सूरज – "अम्मा! उन दोनों ने मुझे बहुत अच्छी तरह पाला पोसा, अच्छे अच्छे कपड़े पहिराये अच्छे अच्छे गहने दिये और अच्छी अच्छी चीजें खाने को दीं। मेरे लिये वह दोनों हीरे की अंगूठी लेने लाल समुन्दर तक गये थे। उनके जाने पर एक दिन दरवाजा खोलते समय मेरे हाथ में कांटा चुभ गया। उसके चुभने से मैं अचेत होगई। जब मैं सचेत हुई तब मैंने अपने पास एक राजा को खड़ा पाया। उसने मुझ से मेरा सारा ब्यौरा सुन मुझे अपनी रानी बना लिया। उसकी जो पहिली रानी थी वह मुझ से डाह करने लगी। फिर अवसर पा उसने मुझे एक तालाब में डुबा दिया। वहां मैं सूरजमुखी का पेड़ बन गई। तब रानी ने उस

पेड़ को उखड़वा कर जलवा डाला और उस राख को जङ्गल मे डलवा दिया। वहां उस राख से मैं आम का पेड़ होगई। जब तुम्हारी दुधेड़ी मे आम गिरा उस समय मैं उसी आम में थी।

"अब मैं अपने पहिले मा बाप भाई बहिनों के पास हूं।" यह कह कर सूरज अपनी मा को लिपट गई।

तब उसकी मा ने कहा, "तब तो राजा ने जो कहा था वह ठीक है। क्यों सूरज, तू जानती है उस दिन तुझे एक राजा ने कुंए पर देखा था? पीछे वह मेरे पास आकर कहने लगा मैं ने अपनी रानी को तेरे कुंए पर देखा है। बता वह कहा है? इस पर मैं ने उस से कहा कि वह तेरी रानी नहीं है। मेरी बेटी है। पर आज मुझे यह बात मालूम हुई। अभी तक मैं धोखे में थी। मेरी सूरज और उस राजा की रानी एक ही है। अरी सूरज ठीक ठीक कहना। क्या तुझे अपने राजा की मामता नहीं है। क्या तेरे मन में उसे देखने की लालसा नहीं उपजती?"

सूरज ने सिर नीचा कर लिया और बोली, "मैं तो उन्हें बहुत प्यार करती हूं। पर उन्हें तो मेरा कुछ भी मोह नहीं है। मैं अब उनसे नहीं मिला चाहती।" सूरज की बात पूरी होने न पाई थी कि इतने किसी ने जोर से किवाड़ खटकाये।

ग्वालिन ने झट जाकर दरवाजा खोला और बाहर राजा को खड़ा देखा। राजा झट झोंपड़ी में घुस गया और सूरज को अपने गले से लगा कर कहने लगा "मेरी प्यारी सूरज मैंने तुझे ढूंढ़ निकाला। तू मुझे छोड़ कर कहा चली गई थी।"

फिर राजा ने ग्वालिन से पूछा "मैंने जब तुम से कहा था

कि मेरी रानी यहां है। तब तूने नाहीं क्यों कर दिया था? यह तो यहां बहुत दिनों से है।"

ग्वालिन ने कहा। "महाराज असल बात यह है। जब आप ने अपनी सूरज को कुंए पर देखा। तब मेरी बेटी वहां थी। पर मुझे यह नहीं मालूम था कि मेरी बेटी ही आप की रानी है।"

अब तो उस झोंपड़ी में आनन्द की लहरें उठने लगी। राजा अपनी रानी को महल में ले गया। उसने सूरज के बाप को गांव दे कर जागीरदार बना दिया।

फिर राजा ने सूरजबाई की बूढ़ी टहलनी से कहा, "तू बड़ी सच्ची और नेक है इस लिये तुझे अपने महल की दरोगाइन का पद देता हूं।" राजा ने उसे ऐसे ऊंचे पद पर कर के बहुत सा धन और गहने भी इनाम में दिये।

राजा की पहली रानी की करतूत खुल चुकी थी। इस लिये राजा ने उसको उसी जेलखाने में डाल दिया जिसमें बुढ़िया टहलनी बन्द थी।

अब तो राजा रानी और रानी के माता पिता और भाई बहिन सुख चैन से दिन बिताने लगे।

Printed by the Baptist Mission Press, Calcutta, and published by Longmans Green & Co., 303 Bow Bazar Street, Calcutta.

RAMA AND SITA

BY

J. C. ALLEN.

TRANSLATED INTO HINDI BY

LALA SITA RAM, B.A.

सीता राम।

जे. सी. आलेन साहिब की अंगरेज़ी पुस्तक का

अनुवाद

लाला सीताराम बी. ए. का रचा हुआ।

LONGMANS, GREEN AND CO.
8, HORNBY ROAD, BOMBAY
303, BOW BAZAR STREET, CALCUTTA
167, MOUNT ROAD, MADRAS
LONDON AND NEW YORK
1914

सीता राम।

१

बहुत दिन हुये इस देश के उत्तर में कोशल नाम एक बड़ा राज था और उसमें राजा दशरथ राज करते थे। उनके चार बेटे थे, राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न। राम जेठे थे।

राम अपने सब भाइयों को प्यार करते थे पर बहुधा लक्ष्मण ही उनके साथ खेलते थे। जहां राम जाते वहीं लक्ष्मण भी रहते थे। ऐसे ही शत्रुघ्न भी भरत के संग रहा करते थे।

राम बहुत अच्छे थे। वह अपने बाप का कहना बहुत मानते थे। उनके बाप कहते "आओ" तो वह उनके पास दौड़ जाते। और जो कहते "जाओ" तो तुरंत भाग जाते।

राम अपने बाप को बहुत चाहते थे। महाराज अपने चारों लड़कों को चाहते थे, पर राम पर उनकी ममता सबसे बढ़कर थी।

महाराज की राजधानी का नाम अयोध्या था। अयोध्या उन दिनों बहुत अच्छा नगर था। उसमें ऊंचे लम्बे चौड़े मकान थे। उसके चारों ओर कोट था जिसके फाटकों पर सिपाहियों का पहरा रहता था और कोई गैर आदमी भीतर आने न पाता था।

पुरी की सड़कों पर बड़ी चहल पहल रहती थी। उन पर हाथी, घोड़े और रथों का सदा आना जाना बनाही रहता था। अयोध्या के रहनेवाले बड़े सुख चैन से रहते थे। महाराज के दिन भी चैन से बीतते थे। उनकी रानियां भी प्रसन्न रहती थीं। अयोध्या में आनन्द की बधाई बजा करती थी।

२

कुछ दिन मे चारों भाई बड़े हो गये, और लिखना पढ़ना सीख लिया। उन को घोड़े पर चढ़ना और तीर चलाना भी सिखाया गया था। चारों भाई साथ ही साथ खेला करते थे। तो भी लक्ष्मण राम के और शत्रुघ्न भरत के संग लगे रहते थे। एक दिन अयोध्या में एक मुनि आये। उनका नाम विश्वामित्र था। उन्होंने महाराज से कहा "महाराज, मेरी आप मदद करें। बन मे मुझे दो राक्षस बहुत सताते हैं। दोनों बड़े बली हैं। मेरे मान के नहीं। राम उन्हें मार सकते हैं। सो राम को आप मेरे साथ कर दें।"

यह सुन राजा दशरथ बहुत घबराये। पर तपसी की बात कैसे टालें। बहुत देर तक चुप रहे पीछे से बोले "मुनि जी आप मुझ से ऐसी बातें क्यों कहते हैं? मै अपने प्यारे राम को अपनी आखों की ओट नहीं कर सकता। राम बच्चा है, वह बली राक्षसों के साथ कैसे लड़ सकेगा। मैं आप चलता हूं और उन राक्षसों को मार डालूंगा। पर आप राम को भेजने के लिये मुझ पर दबाव न डालें"।

महाराज का यह जवाब सुनकर विश्वामित्र जी बिगड़ कर बोले, "महाराज आप राम को मेरे साथ भेज भर दीजिये मैं आप से कहे देता हूं आप मेरी बात मानिये कि राम का एक बाल भी बांका न होगा।

मुनि को क्रोध करते देख, सब लोग डर गये। महाराज भी डरे। तब वसिष्ठ मुनि ने महाराज को समझाया और बोले "महाराज, राम को भेज दीजिये महर्षि विश्वामित्र जिम्मा ले रहे हैं तो राम का सचमुच बाल भी बांका न होगा।

वसिष्ठ जी राजा दशरथ के कुलगुरु थे। उनके समझाने से महाराज के मन का सारा खटका दूर हो गया। गुरु वसिष्ठ ने कहा "राम को भेज दीजिये, कोई हानि नहीं"। यह सुन महाराज ने विश्वामित्र से कहा "ऋषि जी मेरे बेटे को आप ले जाइये"। इसके पीछे महाराज ने राम और लक्ष्मण को अपने पास बुलाया और उनसे कहा "बेटा तुम दोनों विश्वामित्र जी के साथ जाओ"। यह कह कर महाराज ने उन के मुंह चूमे। इस के पीछे राम और लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ चले गये।

३

राह में विश्वामित्र ने राम को बहुत सी बातें सिखलाईं और उन को कई हथियार दिये। इन हथियारों में दैवी शक्ति थी। विश्वामित्र जी ने लक्ष्मण को भी बहुत सी बातें बतलायीं।

चलते चलते सब लोग उस जगह पहुंचे जहां विश्वामित्र की कुटी थी। वहां पर बहुत से और ब्राह्मण रहते थे उन

सब को डरावने राक्षस सदा सताया करते थे। एक दिन वह राक्षस भी आकाश की राह से आते दिखाई पड़े। आते ही वह ब्राह्मणों को धरने पकड़ने लगे।

राम ने उन्हें देखते ही अपने बड़े धनुष पर चिल्ला चढ़ा दोनों राक्षसों के दो बाण मारे। एक तीर लगने से, उन राक्षसों में से एक आस्मान के रास्ते ही से बहुत दूर जाकर समुद्र में गिरा। दूसरा बान दूसरे राक्षस की छाती में लगा और वह धरती पर गिर कर मर गया।

उपद्रवी राक्षसों का इस रीति से नाश होते देख ब्राह्मण बहुत प्रसन्न हुये। उन सब ने राम की बड़ाई की और धन्यवाद दिया।

४

उन्हीं दिनों पूरब में पहाड़ों के बीचमें मिथिला नाम नगरी थी। इस में राजा जनक राज करते थे। वह भी बड़े राजा थे। उन के एक बड़ी सुन्दर लड़की थी जिसका नाम सीता था। जनक के पास एक बड़ा भारी धनुष भी था। वह इतना मजबूत था कि वह किसी के झुकाये नहीं झुक सकता था।

महाराज जनक ने कहा "जो कोई इस धनुष को नवा देगा मैं उसी के साथ सीता का ब्याह करूंगा।

बहुतेरे बली राजाओं ने मिथिला नगरी में आ कर उस धनुष को चढ़ाना चाहा, पर वह किसी के चढ़ाये न चढ़ा। नवाना तो एक ओर रहा उन बली राजाओं में से उस धनुष को कोई उठा भी न सका।

विश्वामित्र भी राम और लक्ष्मण को साथ लिये मिथिलापुरी पहुंचे। विश्वामित्र जी दोनों लड़कों को जनक जी के पास ले गये और उनसे बोले "यह दोनों महाराज दशरथ के बेटे हैं"। यह सुन जनक बहुत प्रसन्न हुये। उन्होंने उस धनुष का हाल दोनो बालकों से कहा और बोले "हम उस धनुष को तुम्हें अभी दिखलाये देते हैं"।

जनक जी की आज्ञा पाते ही कुछ लोग दौड़े और उस धनुष को एक गाड़ी पर रख कर वहीं खींच कर ले आये। वह धनुष बड़ा भारी था। महाराज ने कहा "जो राम इस धनुष को चढ़ायें तो मैं सीता का ब्याह, राम के साथ कर दूंगा।"

यह तमाशा देखने के लिये मिथिला नगरी के बहुत से लोग इकट्ठा हो गये। राम उस धनुष के पास गये। उस बड़े भारी धनुष को उन्हों ने एक हाथ से उठा लिया, उस धनुष के एक छोर से रोदे की रस्सी बंधी थी राम ने मुसका कर उस धनुष को झुकाया और रोदा चढ़ा दिया। इस के पीछे उन्होंने रोदे को बीच से पकड़ा। यह सारा कौतुक लोग वहां खड़े हो कर देख रहे थे; इतने में राम ने रोदे को इतने ज़ोर से खींचा कि उस धनुष के बीच से दो टुकड़े हो गये।

यह देख महाराज जनक ने कहा "सच मुच तुम बड़े बली हो सीता मैं तुम्हीं को दूंगा"।

जनक ने तुरंत अयोध्या को तेज़ चलने वाले हरकारे भेज कर इस बात की खबर राजा दशरथ को दी। राजा दशरथ अपने, और दोनों लड़कों को लेकर मिथिला पुरी मे जा पहुंचे।

राम का सुशीला सीता के साथ ब्याह हुआ। लक्ष्मण का सीता के बहिन के साथ ब्याह हुआ। रहे भरत और शत्रुघ्न। सो महाराज जनक ने इन दोनों का ब्याह भी अपनी भतीजियों के साथ कर दिया। ब्याह हो जाने पर विश्वामित्र मिथिला से चल दिये।

महाराज जनक ने अपनी लड़कियों को दान दायज में बड़े दाम की चीजें दी।

महाराज दशरथ अपने बेटों और बहुओं को लिये प्रसन्न होकर अयोध्या को लौट आये।

५

धीरे धीरे दिन बीतते गये। राजा दशरथ को बुढ़ापे ने धर दबाया। तब उन्होंने कहा "हम राम को राज देंगे।

इस बात की खबर भरत की मां रानी कैकेयी को लगी। वह बहुत बिगड़ीं। उन्होंने राजा दशरथ से कहा कि "मेरे बेटे भरत को राज दो और राम को बन भेज दो"।

राजा बोले, "नहीं हम राम ही को राज देंगे।"

इस पर कैकेयी ने कहा "बहुत दिनों की बात है तुम ने मुझे दो बर देने को कहा था। तुम ने यह भी कहा था कि जो मांगोगी वही देंगे; सो क्या अब तुम अपनी बात पलटोगे? अब मैं तुम से यह मांगती हूं कि राम को तो बन भेज दो और भरत को गद्दी पर बिठा दो।"

यह सुन महाराज दशरथ बहुत उदास हुये पर बेचारे

कर ही क्या सकते थे। राजा के लिये अपनी बात का पलटना बड़ी बुराई की बात है।

राजा दशरथ ने राम को बुलाकर उनसे कहा "प्यारे— प्यारे राम" इस के आगे उन के मुंह से बात न निकल सकी।

पर कैकेयी अब भी राजा के पास ही बैठी थी। उसने कहा "राम! तुम चौदह बरस तक बन मे जा कर रहो। तुम्हारा भाई भरत यहां राज करेगा"। साथ ही साथ कैकेयी ने राजा के वादे का भी हाल राम को बता दिया।

तब राम ने समझा कि बन में जाना हमारे लिये उचित है। क्योंकि राजा अपनी बात पलट नहीं सकते। राम अपने बाप को प्रणाम कर वे अपने घर चले गये। राजा दशरथ से बोला तक न गया और राम के लिये रोते झींकते रह गये। अपने कमरे में जाकर बहुत रोये और बहुत दुखी हुये।

६

राम को बन मे जाना ही चाहिये। राम को अब अपनी प्यारी सीता अपने प्यारे संगी लक्ष्मण को छोडना ही पड़ेगा। राम अब अपनी प्यारी मा और अपने और भाइयों को छोड़ कर बन को जायंगे। उनको अयोध्या और अपना घरद्वार छोड़ बन में रहना ही पड़ेगा। राम को इन्हीं बातों का सोच हुआ।

शायद तुम समझ रहे होगे कि उस समय राम रोये होंगे? पहले तो वह रोये नहीं और यदि रोये भी हों तो उन्हें रोते किसी

ने नहीं देखा। राम ऐसे कच्चे दिल के न थे कि वह ऐसे समय आंसू गिराते।

राम की मां ने उन्हें बहुत कुछ समझाया बुझाया और कहा "भैया अपनी प्यारी माता को छोड़ कर तुम कहीं मत जाओ। लक्ष्मण ने कहा राम, तुम हम सब में बड़े हो तुमही इस देश के राजा हो सकते हो, न कि भरत। तुम ठहरो और हम को छोड़ कर कहीं मत जाओ। हम तुम्हारी ओर से लड़ेंगे"।

इस पर राम ने कहा "भाई मेरे सामने ऐसी बातें मत कहो। अच्छे लड़कों का काम है कि अपने बाप का कहना मानें। मैं उनकी बात टालता हूं तो लोग मुझे बुरा कहेंगे मुझे बन में जाना ही चाहिये"।

राम ने अपनी मां को प्रणाम करके उनसे बिदा मांगी। फिर वह सीता से बिदा मांगने गये। राम को सीता से बढ़ कर कोई चीज प्यारी न थी। तो भी उन्हों ने सीता को छोड़ कर जाना ठीक समझा। क्योंकि बेटे को बाप का कहना मानना ही चाहिये।

सीता का राम पर बड़ा प्रेम था। सीता ने राम से कहा "मैं तुम से अलग नहीं रह सकती, तुम जाते हो तो मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगी, मैं अकेली नहीं रह सकती। मैं महलों के गुद गुदे गद्दों पर सोऊं और आप बन में कांटों पर लेटें। मुझ से यह नहीं हो सकता। तुम जाते ही हो तो मुझे भी अपने साथ ही लेते चलो। स्त्री का धर्म है कि वह सदा अपने पति के साथ रहे। आप मुझे अपने साथ ही लेते चलिये"। राम ने

उनको बहुत समझाया। उन्हे सीता के लिये बड़ा सोच था। इस सोच के सामने वह अपना दुख भूल गये। जब सीता ने न माना तो राम बोले, "अच्छा चलो साथ चलो"।

लक्ष्मण ने जब यह सुना तो वह बोले "राम बन को जाते हैं, तो मै घर कैसे रह सकता हूं" और वह भी उनके साथ हो लिये।

इन तीनों का अपने घर और अपने मां बाप और अपने भाइयों पर बड़ा स्नेह था। उनको छोड़ने के समय तीनो बहुत दुखी हुये। तिस पर भी वह प्रसन्न थे। कारण यह था कि वह अपने पिताका कहना मानकर बन को जा रहे थे।

सीता इस लिये प्रसन्न थीं कि वह अपने पति के साथ जा रही थीं।

लक्ष्मण इस लिये प्रसन्न थे कि वह राम के साथ उनकी रखवाली के लिये जाते थे।

तीनों अपने बाप मा भाईबन्द, घर द्वार, संगी साथी सुख का सामान छोड़ कर बन को चले गये।

बन मे जाकर उन को जंगली जानवरों का सामना करना था। बृक्षा पेड़ की छालो से अपना तन ढाकना होगा। उन को बन में रह कर आधे पेट खा कर दिन काटने हैं। तो भी वह न डरे और न उदास हुये। इन सब के होते हुये उन को प्रसन्नता इस बात की थी जो कर रहे थे वही उन का धर्म था।

७

राम के पिता बड़े दयालु थे। राम बन चले गये तो वह एक कमरे में जा बैठे। उनको ऐसा बुरा काम करना पड़ा

इसका उनको बड़ा दुख था। यह दुख इतना बढ़ा कि उन को अपना जीना बोझ जान पड़ने लगा॥

राम के बनको जाने के कुछ ही दिन पीछे मारे दुख के राजा दशरथ मर गये।

इस बखेड़े के समय भरत अपनी नानिहाल मे थे। अयोध्या से हरकारे भेज कर कुलगुरु ने भरतको बुलवाया। भरत बड़े ही सज्जन थे। उनकी मामता अपने मां बाप और भाइयों पर बहुत थी।

अयोध्या आकर भरत ने अपने बाप के मरने का हाल सुना। तो बहुत उदास हुये। भरत फूट फूट कर रोने लगे।

फिर भरत से लोगों ने कहा कि आप के बाप आप को राज दे गये हैं।

इस के जवाब मे भरत ने कहा कि "मैं राजा नहीं हो सकता राजा तो मेरे बड़े भाई राम ही हैं।

इस पर भरत की मां ने कहा, "भरत! अब तुम्ही राजा हो, तुम्हारे भाई राम और लक्ष्मण सीता को लेकर बन को चले गये। राजा तुम्ही को राज गद्दी का मालिक कर गये हैं; मेरे ही कहने पर उन्हों ने राम को बनबास दिया है। अब तुम यहां के राजा हो"।

भरत की मां ने यह बातें बड़े गर्व के साथ कहीं, मानों उसने बड़ा काम किया था। उस समय वह फूली नहीं समा रही थी। पर भरत बड़े दुखी हुये।

भरतने कहा "बड़े भाई के सामने मैं राजा क्यों कर हो सकता हूं? मैं अपने सिर पर यह बोझ कभी नहीं रख सकता।

यह सारा राज पाट मेरे बड़े भाई का है न कि मेरा"। फिर रो रो कर कहने लगे।

"भाई! तुम बन को क्यों गये? मेरी भौजाई सीता को तुम अपने साथ बन मे क्यों ले गये? मेरे वीर भाई लक्ष्मण को बन में जाने की क्या ज़रूरत थी? हाय मां तू यह क्यों कह रही है कि "यह राज पाट तेरा है" क्या यह प्रसन्न होने की बात है? यह बतला कि राम लक्ष्मण और सीता कहां हैं? मैं उन को कहां जाकर देखूं?"

महात्मा भरत अगर चाहते तो अयोध्या का सारा राजपाट ले लेते। पर नहीं, वह राजपाट उन का न था; यह तो उनके बड़े भाई राम का था।

उदार भरत बड़े भाई के भक्त थे।

उन्हों ने कहा, "मैं यह राजपाट न लूंगा यह तो बड़े भाई का है।"

महात्मा भरत ने सत्य के सामने धन को तुच्छ समझा।



राम को ढूढ़ने के लिये भरत अयोध्या से चले। उनके साथ सेना भी चली। सेना के साथ भड़कीले झंडे, रंग बिरंगे रथ और सजे हुये घोड़े थे। इस मंडली की सजावट का कहनाही क्या था। पर राजकुमार भरत का मन सेना की इस धूम धाम की ओर न था। वह कुछ और ही सोच रहे थे। चलते चलते वह घने बनों में पहुंचे। भरत अपनी सेना को लिये इधर उधर भटके

तो बहुत पर अन्त में उन्हें उनके भाई और भौजाई चित्रकूट की पहाड़ी पर एक कुटी में मिले।

सेना को देख पहले तो लक्ष्मण बहुत बिगड़े और बोले "भरत हमें मारने यहां भी आ पहुंचा" पर जब राम ने उन्हें समझाया और कहा—"नहीं भरत हमें दुख देने नहीं आते, भरत तो बड़े दयालु हैं" तब लक्ष्मण ठंढे पड़े।

भरत अपने बड़े भाई राम के पास जाकर उन के पैरों पर गिर पड़े और छोटे लड़कों की तरह फूट फूट कर रोने लगे। फिर राम से बोले "भाई! मेरे साथ अयोध्या में चल कर अपना राज पाट संभालो"। पीछे वह अपने भाई और लक्ष्मण और अपनी भौजाई से मिले और उन से बोले "अयोध्या को लौट चलो। सारा राजपाट राम का है। मेरा उसमें कुछ भी नहीं है।

तब राम ने भरत से कहा—"पिता का हमारे लिये वन ही का हुकुम है। क्या हम अपने पिता का कहना न मानें? ऐसा करने से क्या हम सुखी रह सकते हैं। भाई भरत तुमहीं राज पाट संभालो"।

इस को सुन भरत अपने बड़े भाई के पैरों पर गिरे और अयोध्या लौट चलने के लिये उनसे बार बार कहा पर जब राम ने अयोध्या लौट जाना स्वीकार न किया, तब हार कर भरत, अपने भाई की खड़ाउओं को सिर पर रख उदास मन अयोध्या लौट गये। वहां जाकर राम की खड़ाउओं को राजसिंहासन पर रख भरत ने उन पर छाता लगाया, और बोले—"यह राम का राज है। जब तक वह लौट कर न आएंगे तब तक मैं उन की ओर से उनके राज पाट की रखवाली करूंगा"।

६

बली होना अच्छा है और भली होने से सज्जन होना और भी अच्छा है, पर बली और सज्जन होना सब से बढ़ कर है।

जो बली है वह बड़े बड़े काम कर सकता है। वह बड़े से बड़े भैंसे को एक ही हाथ से साफ कर सकता है। पर और लोग उस भैंसे से डर जाते हैं।

जो सज्जन होता है वह भले भले काम करता है। वह दीन लोगों पर दया करता है वह दीन दुखियों से बात चीत करता है और उन्हें प्रसन्न रखता है।

जो आदमी बली और मन का भला होता है उसे सब लोग चाहते हैं। कोई निठुर आदमी किसी निबरे को सताता है, तो वह उसे डांट कर रोक देता है। वह निबरों का सहायक होता है और अन्यायियों का वैरी।

राम भी ठीक ऐसे ही थे। वह दीन दुखियों के सहायक और अत्याचारियों के वैरी थे। उन को जो चाहता उसे वह बहुत चाहने लगते थे। वह बड़े बुद्धिमान थे। बुरा काम कभी नहीं करते थे। वह बड़े बली थे पर अपने बल से वह ठीक ठीक काम लेते थे। वह निबरों के मित्र थे। राम के पास रहते दीन और निबरों को किसी बात का खटका नहीं रहता था।

लड़ाई मे राम को कोई हरा नहीं सकता था। उन के पास बड़े बड़े हथियार थे। उन के पास ऐसे पैने तीर थे जो मजबूत से मजबूत फ़ौलाद के कवच को फोड़ कर पार हो जाते थे।

लक्ष्मण भी लड़ाई लड़ने में बड़े चतुर थे। वह बड़े बली और वीर थे। उन के पास दैवी हथियार थे।

उस बन मे बहुत से डरावने राक्षस रहते थे जो आदमियों को मार कर खाजाते थे। राम और लक्ष्मण ने बहुत से राक्षस मारे। इन राक्षसों का राजा लंका में रहता था। उसका नाम रावण था। उस की सूरत बड़ी डरावनी थी और उसकी देह मे बड़ा बल था।

उसी बन में सूर्पनखा नाम एक राक्षसी रहती थी। वह राम के साथ अपना व्याह करना चाहती थी। एक दिन उसने सीता को लेकर भागना चाहा। लक्ष्मण ने तलवार निकाल कर उस के नाक कान काट लिये और उसे नकटी बूची कर दिया। वह पीरा से और क्रोध के मारे बड़े ज़ोर से चिल्लाने लगी। फिर वह वहां से भाग कर अपने भाई रावण के पास लंका मे गई।

रावण बड़ा बली राक्षस था। वह सोने के सिंहासन पर बैठा था। उस के दस सिर थे और उस की सारी देह मे घावों के चिन्ह थे। उस से उसकी बहिन बोली "दंडक बन में राम नाम का एक आदमी आया हुआ है जो तुम से भी बढ़ कर बली है। उस की स्त्री सीता बड़ी सुन्दर है। मैंने चाहा था कि मैं उसे राम के हाथ से उड़ा लाऊं और तुम्हे लाकर दूं पर उस के भाई लक्ष्मण ने मेरे नाक कान काट डाले"।

यह सुन रावण आगबगूला हो गया और बोला, "यह राम कौन आदमी है! मैं इस से नहीं डरता"। फिर उसने एक राक्षस से कहा तुम सोने के हिरन का रूप बना कर सीता के सामने

हो कर निकलो । वह वैसाही रूप धर कर उस बन में पहुंच गया जहां राम लक्ष्मण रहते थे । सीता उस समय अपनी कुटी के आगे बैठी थीं । उस सुन्दर हिरन को देख कर उन्होंने राम से कहा "देखो देखो यह हिरन कैसा सुन्दर है । हो सके तो इसे पकड़ लो । राम उस हिरन के पीछे दौड़े पर असल में वह हिरन न था, बरन हिरन के रूप में एक राक्षस था । वह बनावटी हिरन दौड़ता दौड़ता राम को बहुत दूर लेगया । अन्त में राम ने उस के एक तीर मारा । तब वह राम की बोली में चिल्ला कर कहने लगा । "लक्ष्मण आओ नहीं तो मैं मरा" । यह कह कर वह मर गया ।

१०

सीता कुटी में बैठी राम के लौटने की राह देख रही थी । जब राम न लौटे तो सीता ने लक्ष्मण से कहा "लक्ष्मण देखो राम तुम्हें बुला रहे हैं, चट पट चले जाओ । देखो तो क्या बात है" ।

लक्ष्मण राम को ढूंढने चले गये । कुटी में सीता अकेली रह-गई । इतने में एक संन्यासी आया और उसने भीख मांगी । सीता ने उसे भीख दी । पर वह असल में संन्यासी न था । वह संन्यासी का रूप धरे हुये रावण था । उसने सीता से कहा "सीता । मेरे साथ चलो" । यह सुन सीता बहुत डरीं और उस राक्षस के सामने से हट गईं । तब रावण ने सीता से कहा "हमारे साथ लंका को चलो, हमारी रानी बनो" यह सुन सीता की देह मारे कोप के कांपने लगी । सीता ने उससे कहा "क्या तू नहीं जानता कि मैं

राम की स्त्री हूं तू यहां से चला जा नहीं तो मेरे से तू अभी मारा जायगा।



रावण और सीता।

तब क्रोधमें आकर रावणने संन्यासीका बाना उतार कर रख दिया, और सीता के सामने अपने असली भयानक रूप में आ खड़ा हुआ।

उसके दस सिर और बीस बाहें थीं। उसकी आंखें लाल लाल थीं। उसकी देह पर बहुत से दाग थे।

उसने सीता को पकड़ लिया और अपने रथ में सीता को बिठाकर वह आकाश की राह होकर चल दिया। सीता बड़े ज़ोर से रोई बिलखी, और चिड़ियों और जानवरों तक से बिनती की कि मेरा यह हाल रामसे कह देना।

जटायु नाम का एक गिद्ध उन्हीं दिनों एक पहाड़ की चोटी पर सो रहा था। उसने सीता का रोना सुना। वह बहुत बूढ़ा था। पर वह बड़ा नामी वीर था।

उसकी महाराज दशरथ से दोस्ती भी थी। उसने सीता को रावण के रथ में देखा तो अपने पर फैला कर आसमान की ओर उड़ा। उसने रावण को डपट कर कहा "अरे राक्षस! ठहर। सीताको उसके पतिके पास पहुंचा दे। ऐसा न करेगा तो मैं तुझसे लडूंगा"। गिद्ध ने बड़ी बहादुरी के साथ रावण का सामना किया, पर उसका वह कुछ बिगाड़ न सका। इतने में रावणने तलवार निकाल कर उसके दोनों पर काट डाले। जटायु धरती पर गिर पड़ा और मौत की घड़िया गिनने लगा।

रावण सीताको लिये हुए आगे बढ़ा। सीताने उससे कहा—"अरे नीच मैं तुझसे लड़ नहीं सकती। पर मैं कभी

सीता राम।

रानी न बनूंगी। राम आयेंगे और तुम्हें मार ले जायेंगे।



११

लक्ष्मण राम के पास पहुंचे। जब रामने उनको देखा तो उनसे पूछा "सीता कहां है। तुम उसे क्यों अकेली छोड़ आये। चलो झट पट हम लोग कुटी को चलें और सीताको देखें"। कुटी पर पहुंच कर जब सीता न देख पड़ी तो दोनों उसे खोजने के लिये इधर उधर घूमने लगे। राह मे उन्हें जटायु गिद्ध मिला। वह धरती पर पड़ा था और उसकी देह से लोहू बह रहा था। जटायुने राम से कहा "तुम्हारी सीता को रावण हर लेगया है"। इस पर रामने उससे पूंछा कि "रावण किधर गया है"। उसके उत्तरमें उस वीर गिद्धने दक्षिण की ओर गरदन हिलाकर इशारा किया और मर गया। राम और लक्ष्मण सीता की खोज मे व्याकुल हो सीताको ढूंढ़नेके लिये आगे बढ़े। जङ्गलों को मझाते वह दोनों दक्षिण की ओर बढ़े चले जाते थे। राम दुःख से पड़ पागल से हो गये थे। लक्ष्मण को दुःख तो था, पर वह पागल नहीं हुये। उन्होंने राम से कहा- "भैया! दुःखी मत हो सीता तो यहां नहीं है। पर हम उनका पता लगा लेंगे"। यह सुन राम को धीरज हुआ। पर पता लगाना कठिन था। क्योंकि चारों ओर बन ही बन था। और उस बनमें न कोई ऐसा आदमी था जो उनको बतला देता कि सीता कहां है।

अन्त में उन्हें सहायता मिली। उनकी हनुमान से भेंट हुई। हनुमान बड़े बुद्धिमान बानर थे। वह दोनों भाइयों को अपने मालिक सुग्रीव के पास ले गये। सुग्रीव को राम का हाल सुन कर

बड़ा दुःख हुआ और उसने कहा कि सीताके ढूंढ़ने में हम तुम्हारी मदद करेंगे ।



हनूमान ।